करुणा व उदारता

आनन्दमय जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुत
श्रीगुरुमाई के साथ घटित कुछ प्रसंग

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १

वाणी अग्रवाल

भारत स्थित गुरुदेव सिद्धपीठ आश्रम में छः वर्ष तक एक गुरुकुल विद्यार्थी के रूप में सेवा अर्पित करने के बाद, सन् १९९१ में मैं एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ़ के रूप में सेवा अर्पित करने के लिए श्री मुक्तानन्द आश्रम आई।

श्री मुक्तानन्द आश्रम आने से ठीक पहले मेरे व्यक्तिगत जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी थी और मेरी बहुत इच्छा थी कि गुरुमाई जी को इस बारे में बताऊँ। उस दौरान जब भी मैं गुरुमाई जी के साथ होती, मैंने उन्हें बताने का कई बार प्रयत्न किया, पर न जाने क्यों, मैं उन्हें बता नहीं पाई।

वहाँ पहुँचने के दो महीनों बाद, मैं आख़िरकार गुरुमाई जी को बता सकी कि मेरे जीवन में क्या हुआ था।

गुरुमाई जी ने पूछा, "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

मैंने उत्तर दिया, "गुरुमाई जी, मैं ख़ुद ही समझ नहीं पा रही हूँ कि मैंने इतने दिनों तक इस बात को अपने मन में क्यों रखा।"

तब गुरुमाई जी ने कुछ ऐसा कहा जो बहुत ही सुन्दर था। उन्होंने कहा, "जब तुम्हें ऐसा लगे और तुम आगे आकर अपनी बात न बता पाओ तो पत्र लिखकर पूजा में रखो और प्रार्थना करो।"

कुछ महीनों बाद मैंने ख़ुद को ऐसी परिस्थिति में पाया जिसमें मैंने ठीक वैसा ही करने का निश्चय किया जैसा कि गुरुमाई जी ने मुझे बताया था। मैं गुरुमाई जी से तीन प्रश्न पूछना चाहती थी, पर समझ नहीं पा रही थी कि मैं ये प्रश्न पूछूँ या नहीं। इसलिए, मैंने उन्हें पत्र लिखा। पत्र में मैंने स्पष्टता से और संक्षिप्त में अपने तीनों प्रश्न लिख दिए। फिर मैंने उस पत्र को पूजा में रख दिया और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की।

अगली सुबह मैं अनुग्रह स्थित अमृत की ओर जा रही थी और मैंने देखा कि गुरुमाई जी सामने से मेरी ही ओर आ रही हैं। जब उन्होंने मुझे देखा तो वे मेरे सामने आकर रुक गईं। उनकी आँखों में एक चमक थी। उन्होंने कहा, "तो तुम्हारे कुछ प्रश्न हैं।" फिर उन्होंने मेरे तीनों प्रश्नों के उत्तर दिए—और उन्होंने वे उत्तर उसी क्रम में दिए जिस क्रम में मैंने अपने पत्र में प्रश्न लिखे थे।

मैं चकित रह गई। गुरुमाई जी ने मेरे हृदय की प्रार्थना सुन ली थी! इस अनुभव से मुझे यह दृढ़ विश्वास हो गया कि मैं जहाँ कहीं भी रहूँ, मेरी श्रीगुरु मेरे साथ हैं। जब भी मैं उनसे प्रार्थना करती हूँ, मेरी श्रीगुरु मेरी प्रार्थना सुनती हैं।

© २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।